Behaviouralism

व्यवहारवाद

राजनीति विज्ञान के अर्थ, उसके स्वरूप तथा उसके विषयक्षेत्र से सम्बन्धित एक अन्य दृष्टिकोण भी है। इस दृष्टिकोण को आधुनिक अथवा समकालीन दृष्टिकोण कहा जाता है। राजनीति विज्ञान के इस आधुनिक (समकालीन) दृष्टिकोण को व्यवहारवादी, उत्तर व्यवहारवादी दृष्टिकोण कहा जाता है। राजनीति विज्ञान के विकास में द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। इस परिवर्तन से पहले व्यवहारवादी (1950 के दशक में) तथा बाद में उत्तर व्यवहारवादी दृष्टिकोण का उदय हुआ। इन्हीं दोनों दृष्टिकोण के कारण युद्ध के बाद का आधुनिक राजनीति विज्ञान परम्परागत दृष्टिकोण की अपेक्षा अधिक व्यापक, अधिक यथार्थवादी तथा अधिक वैज्ञानिक है।

आधुनिक राजनीति विज्ञान अर्थात व्यवहारवादी - उत्तर-व्यवहारवादी दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य के राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन उसकी सम्पूर्णता में किया जाना चाहिए क्योंकि उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवहार को धार्मिक व सांस्कृतिक पहलुओं से पृथक नहीं किया जा सकता। अतः राजनीति विज्ञान में मनुष्य के केवल राजनीतिक क्रियाकलापों का ही नहीं वरन उसके राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले गैर-राजनीतिक तत्वों का भी अध्ययन किया जाना चाहिए। राजनीति विज्ञान वह विषय है जिसमें मनुष्य के केवल राजनीतिक पहलू का ही नहीं वरन समस्त पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। राजनीति विज्ञान के आधुनिक दृष्टिकोण के समर्थकों में डेविड ईस्टन, कैटलिन, लासवेल, आमण्ड, पावेल, रॉबर्ट डहल इत्यादि प्रमुख हैं।

परम्परावादी दृष्टिकोण या परम्परागत राजनीति विज्ञान की प्रवृत्ति, स्वरूप दृष्टिकोण एवं क्षेत्र के विरोध के रूप में तथा राजनीति विज्ञान को विज्ञान के स्तर पर लाने या उसे समाजोपयोगी बनाने के लिए एक प्रयास के रूप में व्यवहारवाद का प्रारम्भ हुआ। जिसने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आन्दोलन का रूप ले लिया। इसे ही राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में व्यवहारवादी क्रान्ति के नाम से जाना जाता है। इस दृष्टिकोण को विकसित करने का श्रेय अमेरिकी राजनीतिशास्त्रियों को जाता है जिनमें कैटलिन, लासवेल, आमण्ड, डेविड ईस्टन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

व्यवहारवाद की व्याख्या राजनीति विज्ञान को वास्तविक बनाने के प्रयास के रूप में किया जा सकता है। यह राजनीतिक संस्था व संरचना के स्थान पर केन्द्रित अध्ययन पर ज्यादा बल देता है। वैज्ञानिक परिशुद्धता, पर्यवेक्षण सत्यापन, परिमाणन आदि व्यवहारवाद के प्रमुख आधार हैं। व्यवहारवाद राजनीति के अध्ययन शोध व विश्लेषण के लिए अनुभवात्मक और प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण पर जोर देता है जो राजनीति विज्ञान को संस्थागत, कानूनी एवं दार्शनिक सीमाओं से बाहर अपने अध्ययन का केन्द्रबिन्दु राजनीतिक व्यवहार को ही मानता है। व्यवहारवाद मनुष्य के केवल बाह्य कार्यों से ही सम्बद्ध नहीं रखता, वरन् वह उसकी भावनात्मक प्रक्रियाओं से भी सम्बद्ध है। यह मनुष्य के मनोभावात्मक, बोधात्मक (Preceptual) तथा दृष्टिकोणात्मक (Attitudinal) तत्वों का अध्ययन करता है।

व्यवहारवाद का कोई निश्चित सिद्धान्त नहीं है जिसकी अपनी निश्चित मान्यता और नियम हो।

इसे एक मनोदशा व अनुनय (persuasion) कहा गया है। जैसे जोसेफ, डब्ल्यू. डेविड ट्रूमैन, किर्क पैट्रिक आदि ने वैज्ञानिक पद्धति को ही व्यवहारवादी शोध मानते हुए वास्तविक व्यवहार पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। संक्षेप में, व्यवहारवाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य नई इकाईयों, नई पद्धतियों, नई तकनीकों के तथा एक व्यवस्थित सिद्धान्त का विकास करना है।

व्यवहारवाद का ऐतिहासिक विकास संयुक्त राज्य अमेरिका में राज्य विज्ञान के यथार्थवादी तथा अनुभववादी दृष्टिकोण के साथ जुड़ा हुआ है। यह उल्लेख-नीय है कि 19वीं सदी के अन्त में ब्राइस आदि की रचनाओं में संस्थाओं के व्यवहार पर बल दिया जाने लगा. जिले ईडन ने यथार्थ में परन्तु यथार्थ रूप इस काल को शोध का काल कहा है। 1908 ई० में प्रकाशित दो पुस्तकें ग्राहम वालास की (Human Nature in Politics) एवं बेन्टले की 'The process of Government' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्होंने मनोवैज्ञानिक प्रभाव में सामाजिक समूहों के कार्यों के अध्ययन को महत्वपूर्ण माना है। इसके बाद 1920 के दशक में चार्ल्स. ई. मैरियम द्वारा "Conference on the science of Politics", 1925 ई० में अपनी रचनाओं में मनोविज्ञान, समाजशास्त्र आदि सामाजिक अनुशासनों की पद्धतियों के उपयोग का आग्रह किया गया और चार्ल्स मैरियम के सहयोगियों एवं विद्यार्थियों के द्वारा शिकागो में वैज्ञानिक पद्धति एवं अन्तर

अनुशासनात्मक अध्ययन की शुरुआत हुई। मेरियम को व्यवहारवादी आन्दोलन का "बौद्धिक-पिता" कहा जाता है। मेरियम की पुस्तक 'New Aspect of politics' (1925) ने व्यवहारवादी राजनीति-विज्ञान के अध्ययन केन्द्र में बदल दिया, जो 'शिकागो सम्प्रदाय' के नाम से विख्यात है। इसके बाद लॉसवेल, ट्रूमैन, साइमन आदि ने शिकागो सम्प्रदाय के कार्य को आगे बढ़ाया।

जहाँ तक व्यवहारवाद के उदय के कारणों का सवाल है तो आधुनिक रूप में व्यवहारवाद के उदय के ~~सामाजिक कारण~~ कई कारण थे —

- परम्परागत राजनीति विज्ञान की अध्ययन प्रणाली से निराशा इसके फलस्वरूप राजनैतिक वैज्ञानिकों ने नए उपागम की खोज निकालने का कार्य प्रारम्भ किया
- 1930 के दशक में ~~अमेरिका~~ अमरीका में अनेक यूरोपीय खासतौर विशेषकर जर्मन शरणार्थियों का आगमन हुआ। उन्होंने समाजशास्त्रीय विधियों द्वारा राजनीति विज्ञान का अध्ययन शुरू किया, जिसके कारण व्यवहारवादी उपागम की उपयोगिता बढ़ी।
- अमरीकी विश्वविद्यालयों में राजनीति विज्ञान और समाज-शास्त्र विभागों के अध्ययन पर पर आसीन कुछ विद्वानों ने राजनीतिक विज्ञान और समाजशास्त्र विभागों के अध्ययन पर पर आसीन कुछ विद्वानों ने राजनीतिक समस्याओं के विश्लेषण हेतु व्यवहारवादी दृष्टिकोण पर जोर दिया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध ने परम्परागत विज्ञान की अपूर्णताओं को उजागर करते हुए इस बात को स्पष्ट कर दिया कि राजनीतिक जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए संस्थाओं एवं संरचनाओं के अध्ययन के बजाए उनमें काम करने वाले व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करना होगा।